प्रौढ़ निरक्षर अधिगमकर्ताओं की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ

चित्ररेखा*

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश की साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत है। पुरुष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत और महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि लगभग 26 प्रतिशत व्यक्ति अब भी निरक्षर हैं। 'ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट, 2017–18' में यूनेस्को ने भी माना है कि विश्व के 35 प्रतिशत निरक्षर लोग अब भी भारत में रहते हैं। जो कि किसी-न-किसी कारण से शिक्षा से वंचित रह गए हैं। इनमें बच्चे व बड़े, दोनों शामिल हैं। बड़े लोगों को हम प्राय: वयस्क अथवा प्रौढ़ के नाम से भी जानते हैं। ये वयस्क निरक्षर अधिगमकर्ता कौन हैं? ये पढ़ना क्यों नहीं चाहते? ऐसे कौन से कारण हैं, जिनकी वजह से वे पढ़ने को तैयार नहीं हो पाते? उनकी अपनी क्या-क्या समस्याएँ हैं? उन्हें पढ़ाते समय एक शिक्षक के सामने कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं? उन्हें पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है? इन सब महत्वपूर्ण बिंदुओं को इस लेख में एक शिक्षक के द्वारा किए गए प्रयासों व एक प्रौढ़ निरक्षर व्यक्ति 'केवट' की कहानी के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है।

जैसे ही हम वयस्क अथवा प्रौढ़ की बात करते हैं, हमारे मन में प्रश्न उठता है कि ये वयस्क अथवा प्रौढ़ निरक्षर अधिगमकर्ता कौन हैं? वयस्क अथवा प्रौढ़ निरक्षर अधिगमकर्ता, हर वह व्यक्ति है जो किसी-न-किसी कारण से अपनी बाल्यावस्था में शिक्षा से वंचित रह गया है और जिसे अब हमें शिक्षा की धारा से जोड़ना है अर्थात् उसे पढ़ने व लिखने को तैयार करना है। अब प्रश्न यह है कि इसके अंतर्गत कौन-कौन आते हैं? इसमें वे सभी व्यक्ति शामिल हैं जो अपनी बाल्यावस्था व किशोरावस्था से गुज़र चुके हैं। जो कभी स्कूल नहीं गए या जिन्हें केवल अपना नाम ही लिखना या पढ़ना आता है या नहीं भी आता है। वे अन्य लिखी हुई चीज़ों को पढ़ने व लिखने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। गणित संबंधी कुछ समस्याओं को वे मौखिक रूप से हल करने में तो समर्थ हैं, परंतु लिखित रूप से हल करने में स्वयं को समर्थ नहीं पाते हैं अर्थात् वह अक्षरों व अंकों को पहचानने, पढ़ने व लिखने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं और इसका कारण उनकी कोई शारीरिक व मानसिक अयोग्यता न होकर उसे पढ़ने के लिए उचित अवसर व वातावरण का न मिलना होता है। प्रौढ़ (वयस्क) अधिगमकर्ता पढ़ने को तैयार क्यों नहीं होते? उनकी ऐसी कौन-सी समस्याएँ होती हैं जो उन्हें

**प्रवक्ता*, ज़िला संसाधन इकाई, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, घुम्मनहेड़ा, नयी दिल्ली–110073

पढ़ने-लिखने से रोकती हैं? आइए, इसे हम 'केवट' की कहानी के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं।

कहानी

'केवट' एक ऐसा किसान है जो दिन-रात खेती के काम में लगा रहता था। वह अपने खेती के काम से बहुत खुश था। उसके खेत में जो फ़सल पैदा होती, उसे बाज़ार में बेचकर उससे जो रुपये/पैसे प्राप्त होते, उसी से वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। परंतु आजकल केवट अपने खेती के काम से खुश नहीं है, क्योंकि इस बार उम्मीद के अनुसार उसकी फ़सल अच्छी व ज़्यादा पैदा नहीं हुई। उसका हाथ बहुत तंग है। कमाई न के बराबर है। खेती के अलावा कोई और काम उसे करना आता नहीं है। वह आजकल बहुत उदास रहता है। उसे अपने बेटे गौरव का दाखिला भी स्कूल में करवाना था। इसलिए वह अपने बेटे गौरव को एक दिन स्कूल लेकर गया और स्कूल अध्यापक से उसका दाखिला स्कूल में करने को कहता है। शिक्षक केवट को गौरव का दाखिला फ़ार्म देता है और उसे भरने को कहता है, परंतु केवट उसे भरने से मना कर देता है और बताता कि उसे पढ़ना व लिखना नहीं आता। तब शिक्षक दाखिला फ़ार्म स्वयं भरने के बाद केवट को फ़ार्म पर हस्ताक्षर करने को कहता है। केवट दाखिला फ़ार्म पर हस्ताक्षर करने से भी मना कर देता है और बताता है कि उसे हस्ताक्षर करना भी नहीं आता है। वह बताता है कि वह ये सब काम अन्य लोगों से ही करवाता है। शिक्षक ने उससे पूछा कि उसे पढ़ना-लिखना क्यों नहीं आता? केवट शिक्षक को बताता है कि इसका मुख्य कारण गरीबी है। गरीबी के कारण उसके माता-पिता ने उसे पढ़ने के लिए कभी स्कूल ही नहीं भेजा।

शिक्षक ने फिर केवट से पूछा, "आपके परिवार में कौन-कौन है? क्या उनमें से किसी को पढ़ना आता है?" पूछने पर केवट ने अपने परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में बताया कि उसके घर में उसके माता-पिता, उसकी पत्नी कविता और उसके दो बच्चे गौरव और सौरभ हैं। गौरव पाँच साल का है, जबकि सौरभ अभी दो साल का ही हुआ है। उसने बताया कि उसके परिवार में से किसी को पढ़ना-लिखना नहीं आता क्योंकि उनमें से कोई भी सदस्य कभी स्कूल गया ही नहीं। तब शिक्षक ने उससे जानना चाहा कि क्या तुम अब पढ़ना चाहते हो? केवट ने कहा कि अब उसकी पढ़ने की कोई इच्छा नहीं है और वह मना कर देता है तथा अपने न पढ़ने के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के तर्क देना शुरू कर देता है, जैसे—

- इस अवस्था में पढ़-लिखकर अब वह क्या करेगा।
- अगले जन्म में पढ़ना-लिखना सीख लेगा।
- नौकरी थोड़े ही ना करनी है।
- बच्चे पढ़कर बता देंगे।
- उम्र निकल गई है, इसलिए शर्म आती है।
- वह पढ़ेगा तो खेत पर कब जाएगा।
- पढ़ने के लिए समय नहीं है।
- बच्चों के साथ पढ़ेगा तो लोग क्या कहेंगे।
- अब उसे कौन पढ़ाएगा।
- पढ़ाई में दिमाग लगाना पड़ता है और अब दिमाग इतना काम नहीं करता आदि-आदि।

शिक्षक केवट के विभिन्न तर्कों को सुनने के बाद अपनी तरफ़ से उनका संतोषजनक जवाब देने का भरपूर प्रयास करता है। कभी शिक्षक को लगता कि

केवट पढ़ने को मान जाएगा, पर दूसरे ही क्षण केवट पढ़ने से मना कर देता। शिक्षक उसे समझाने का पूरा-पूरा प्रयास करता रहा, परंतु केवट अपने तर्कों पर जस का तस ही टिका रहा और शिक्षक की कोई भी बात मानने को तैयार ही न था। अब शिक्षक के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसे पढ़ने के लिए तैयार करने की थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह ऐसा क्या करे कि केवट अपने आप खुशी-खुशी पढ़ने को तैयार हो जाए।

शिक्षक सोचने लगा कि कोई छोटा बच्चा होता तो उसे प्यार से, धमका कर, डर से या फिर कोई लोभ देकर पढ़ने को मजबूर किया जा सकता था, पर यहाँ पर तो स्थिति बिलकुल विपरीत है, यहाँ उसका सामना किसी बच्चे से नहीं, अपितु एक ऐसे वयस्क, परिपक्व व्यक्ति से है जिसके अपने विचार हैं, अपने सिद्धांत हैं, जिनमें परिवर्तन करना टेढ़ी खीर के समान है और तब शिक्षक ने महसूस किया कि एक बच्चे की तुलना में एक वयस्क मानसिक दशा को परिवर्तित करना बहुत मुश्किल कार्य है। बच्चे की तुलना में वयस्क को मानसिक रूप से पढ़ने के लिए तैयार करना एक बड़ी चुनौती है। परंतु प्रश्न अभी भी वहीं का वहीं था कि केवट को पढ़ने के लिए तैयार कैसे किया जाए? वह केवट को मानसिक रूप से पढ़ने के लिए तैयार करे तो कैसे?

शिक्षक ने सोचा कि वह हार नहीं मानेगा और वह केवट को पढ़ना व लिखना, दोनों सिखाएगा। उसने एक योजना बनाई और केवट से दोस्ती करने की सोची और वह उससे लगातार संपर्क में रहने लगा। धीरे-धीरे उसने केवट से जाना कि उसके आस-पड़ोस में और कौन-कौन व्यक्ति हैं जो पढ़ना-लिखना नहीं जानते। इसकी जानकारी उसने अपने स्कूल के बच्चों के माध्यम से तथा स्वयं एकत्रित की। जानकारी एकत्रित करने के बाद शिक्षक ने उन सभी नामों की एक सूची बनाई और देखा कि केवट के मोहल्ले में लगभग चार-पाँच व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें पढ़ना व लिखना, दोनों नहीं आता। उसने उन सभी लोगों से संपर्क बनाया तथा स्कूल के विभिन्न कार्यक्रमों में उन्हें बुलाने लगा, ताकि वह उनका विश्वास जीत सके।

शिक्षक उन सभी से उनकी खेती के बारे में तरह-तरह की बातें करता। उनसे पूछता कि वे कौन-कौन सी फ़सल उगाते हैं? फ़सल उगाने के लिए वे बीज कहाँ से खरीदते हैं? बीज खरीदते समय यह कैसे जानते हैं कि दुकानदार ने उन्हें सही कीमत पर सही बीज दिया है? वह उन्हें बताता कि वे कहाँ से सस्ता व अच्छा बीज प्राप्त कर सकते हैं? कहाँ पर अपनी फ़सल उचित दामों में बेच सकते हैं। वह बातचीत के ज़रिए अपनी पहुँच व संबंध उन सब लोगों के साथ बनाने लगा। उनकी समस्याओं के माध्यम से उन्हें यह महसूस कराने लगा कि वे खेती के साथ-साथ कोई छोटा-मोटा व्यवसाय भी कर सकते हैं। किस प्रकार वह सही और अच्छी ज़िंदगी जी सकते हैं। किस प्रकार से वे अपने बच्चों का सही पालन पोषण कर सकते हैं। वह उनके हर काम को शिक्षा से जोड़ने लगा और शिक्षा से होने वाले फ़ायदों को जोड़कर बताने का प्रयास करने लगा।

शिक्षक ने मुख्य रूप से केवट व उसके समूह को पढ़ाने के लिए जो योजना बनाई, उस योजना में उसने अग्रलिखित बातों को शामिल किया —

- **बातचीत करना**—बातचीत किसी के साथ संपर्क बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। इस बात को समझते हुए उसने बातचीत के माध्यम से उनसे जुड़कर व उनके दुख-दर्द में शामिल होकर उनका विश्वास जीतने का प्रयास किया।
- **स्कूल प्रंबधन समिति में शिक्षा के मुद्दे को शामिल करना**— स्कूल प्रंबधन समिति में भी इस मुद्दे को शामिल कर उस पर चर्चा कराकर व एक ठोस रणनीति बनाकर अभिभावकों को शिक्षा के महत्व से अवगत कराया।
- **साथी शिक्षकों की सहायता से शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाना**— साथी शिक्षकों की सहायता लेकर व उन्हें जागरूकता फैलाने में भूमिका निभाने को कहा।
- **अन्य लोगों के अनुभव को साझा करवाना**— समाज के अन्य लोगों को, जिन्हें पहले पढ़ना-लिखना नहीं आता था और उन्होंने बाद में पढ़ना-लिखना सीखा, उनसे केवट व अन्य लोगों को मिलवाया व उनसे उनके अनुभव साझा करवाकर पढ़ने को प्रोत्साहित किया।
- **नाटक के माध्यम से समानुभूति करवाना**— उन सभी समस्याओं को लेकर स्कूल के बच्चों से नाटक तैयार करवाया, जिनका सामना केवट व अन्य लोग कर रहे थे और उसे देखने के लिए सभी बच्चों के माता-पिता को स्कूल में आमंत्रित किया तथा उसी के समानान्तर एक अन्य नाटक प्रस्तुत करवाया, जिसमें शिक्षा के द्वारा उनका हल दर्शाया गया, जिससे कि वे शिक्षा की अहमियत को समझ सकें।

शिक्षक ने पाया कि ऐसी बहुत सारी समस्याएँ हैं जो वयस्कों को पढ़ने से रोकती हैं, जैसे—

- वे हतोत्साहित जल्दी हो जाते हैं।
- उनकी सोच पुरानी व रूढ़िवादी होने के साथ-साथ नकारात्मक होती है।
- समय का अभाव होता है। वे अपने लिए समय नहीं निकाल पाते।
- उनकी पढ़ने में रुचि नहीं होती।
- संसाधनों का अभाव होता है।
- शिक्षक अर्थात् कोई पढ़ाने वाला नहीं मिल पाता।
- धन का अभाव होता है।
- बेइज्ज़ती व शर्म महसूस करते हैं।
- कलम पकड़ने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं।
- पढ़ने व बोलने में झिझक महसूस करते हैं।
- वे पढ़ने-लिखने के लिए मानसिक रूप से जल्दी तैयार नहीं हो पाते।

इस अवस्था में ज़रूरत होती है उनके साथ धैर्य से काम करने की, उनकी भावनाओं व विचारों को सम्मान के साथ बदलने की, उनके साथ तालमेल बैठाकर उनकी पुरानी रूढ़िवादी सोच को बदलने की।

उपरोक्त प्रयास करने के बाद शिक्षक ने पाया कि केवट व उसका साथी समूह अब शिक्षा के महत्व को समझने लगा है और वे अब यह समझने लगे हैं कि पढ़ने की न तो कोई उम्र होती है और न ही कोई रुकावट उसमें बाधा डालती है। ज़रूरत है तो स्वयं की इच्छाशक्ति को जाग्रत करने की, क्योंकि कहा गया है कि 'मन के हारे हार है और मन के जीते जीत', अर्थात् जब हम स्वयं ही हार मान लेते हैं तो विश्व की कोई भी ऐसी शक्ति नहीं जो हमें जीत दिला सके। इसलिए स्वयं की इच्छाशक्ति को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि जहाँ चाह है, राह भी वहीं पर है। इस प्रकार केवट व उसके सभी साथी पढ़ने को तैयार हो गए।

निष्कर्ष

किसी भी देश व समाज की उन्नति और विकास का परिचायक वहाँ की शिक्षा है। शिक्षा हमारी अधिकांश समस्याओं का हल करने का एक अति उपयोगी साधन है। शिक्षा का मतलब केवल अक्षर ज्ञान नहीं है, बल्कि शिक्षा हमारी चेतना को जाग्रत करने का मूलभूत आधार बिंदु है। अक्षर ज्ञान न केवल हमें अक्षर पहचानने में सहायक होता है, बल्कि यह अपनी बात लिखकर व दूसरों की बात को पढ़कर, अर्थग्रहण कर समझने में सहायक होता है, यह अन्य दूसरे व्यक्तियों के साथ संपर्क बनाने में व उनके साथ तालमेल रखने में सहायता करता है। सबसे बड़ी बात यह है कि शिक्षा आज के आधुनिक समय में स्वयं के शोषण को रोकने का एक महत्वपूर्ण हथियार है। यह तार्किक और आलोचनात्मक व सकारात्मक चिंतन को बढ़ाता है। इस प्रकार से यह अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाने का एकमात्र साधन है।

संदर्भ

भारत सरकार. 2011. वर्ष 2011 की जनगणना. http://www.censusindia.gov.in/2011census/PCA/PCA Highlights/pca_highlights_file/India/Chapter-1.pdf से लिया गया है.

यूनेस्को. 2017–18. *ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट, 2017–18*. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000259338 से लिया गया है.